भजन

तर्ज–दिल ही दिल में ले लिया दिल

अर्श की खिलवत भुलाकर,आई रूहें आपकी
अब ये घबरा करके पूछें,कब हो रवानी धाम की

1–इश्क के आलम में हमको,क्या ये सूझी थी धनी
इस फनां की चाह ने,दे दी जुदाई आपकी

2–एक पल भी था न गुजरा,आपसे बिछुड़े हुए
तुरंत थामा हाथ मेरा,यह है खुदाई आपकी

3–वारी जाऊं उन रूहों पर,जिनके आशिक आप हैं
चरणरज उनकी मैं चाहूं,जिनसे है निसवत आपकी

4–बक्श दो धनी सब खतायें,ले चलो अब ले चलो
कुछ नहीं मुश्किल ले चलना,मेहर हो जब आपकी